MODEL QUESTION PAPER

(Academic Session : 2020 - 2021)

Hindi

TIME : 3 Hr. **M.M. : 80**

सामान्य निर्देश : निम्नलिखित निर्देशों का पालन कीजिए :

- इस प्रश्न पत्र में दो खंड 'अ' और 'ब' है। खंड 'अ' में वस्तुपरक तथा खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए है।
- खंड 'अ' में कुल 6 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें कुछ प्रश्नों के वैकलपिक प्रश्न भी सम्मिलित हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के ही उत्तर दीजिए।
- खंड 'ब' में कुल 8 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें कुछ प्रश्नों के वैकल्पिक प्रश्न भी सम्मिलित हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड 'अ'

प्र.1 निम्नलिखित गदयांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्न मे से सही विकल्प चुनकर लिखिए $1 \times 1 = 10$

वैदिक युग भारत का प्रायः सबसे अधिक स्वाभाविक काल था। यह कारण है कि आज तक भारत का मन उस काल की ओर बार–बार लोभ से देखता है वैदिक आर्य अपने युग को स्वर्णकाल कहते थे या नहीं, यह हम नहीं जानते ; किंतु उनका समय हमें स्वर्णकाल के समान अवश्य दिखाई देता है। लेकिन जब बौद्ध–युग का आंरभ हुआ, वैदिक समाज की पोल खुलने लगी और चितकों के बीच उसकी आलोचना आरंभ हो गई। बौद्ध–युग अनेक दृष्टियों से आज के आधुनिकता– आंदोलन के समान था। ब्राह्मणो की श्रेष्ठता के विरूद्ध बुद्ध ने विद्रोह का प्रचार किया था, जाति प्रथा के बुद्ध विरोधी थे और मनुष्य को वे जन्मना नहीं, कर्मणा श्रेष्ठ या अधम मानते थे। नारियों को भिक्षुणी होने का अधिकार देकर उन्होंने यह बताया था। कि मोक्ष केवल पुरूषो के ही निमित्त नहीं है, उसकी अधिकारिणी नारियाँ भी हो सकती है, जो जाति–प्रथा के विरोधी थे, जो मनुष्य को जन्मना नहीं, कर्मणा श्रेष्ठ या अधम समझते थे। उनकी प्रेरणा से देश के हजारों– लाखों युवक, जो उत्पादन बढ़ाकर समाज का भरण–पोषण करने के लायक थे, संन्यासी हो गए। संन्यास की संस्था समाज–विरोधिनी संस्था है।

(i) भारत का प्रायः सबसे अधिक स्वाभाविक काल था।

(अ) त्रेता युग (ब) पाषाण युग

(स) वैदिक युग (द) आधुनिक युग

(ii) आज तक भारत का मन किस काल की ओर बार–बार लोभ से देखता है

(अ) त्रेता युग को (ब) पाषाण युग को

(स) वैदिक युग को (द) आधुनिक युग को

(iii) वैदिक आर्य अपने युग को कहते थे

(अ) राम राज्य (ब) स्वर्ण काल

(स) सतयुग (द) रजत काल

(iv) कौनसा युग स्वर्णकाल के समान दिखाई देता है।

(अ) त्रेता युग (ब) पाषाण युग

(स) वैदिकयुग (द) आधुनिक युग

(v) वैदिक समाज की पोल कब खुलने लगी

(अ) जब बौद्ध युग का आंरभ हुआ (ब) जब जैन –युग का आंरभ हुआ

(स) जब –मध्य कालीन युग का आंरभ हुआ (द) जब आधुनिक का आंरभ हुआ

(vi) बौद्ध–युग अनेक दृष्टियों से आज के किस युग के समान था।
(अ) पुनर्जागरण आन्दोलन (ब) मध्यकालीन आन्दोलन
(स) आधुनिक–आंदोलन (द) वर्तमान–आन्दोलन

(vii) ब्राह्माण की श्रेष्ठता के विरुद्ध किसने विद्रोह का प्रचार किया था-
(अ) बुद्ध ने (ब) स्वामी दयानंद सरस्वती ने
(स) महावीर स्वामी ने (द)सभी ने

(viii) निम्नलिखित मे से कौन जाति प्रथा के विरोधी थे-
(अ) बुद्ध (ब) महात्मा गाँधी
(स) ईश्वर चन्द्र विद्यासागर (द) महावीर स्वामी

(ix) निम्नलिखित में से वो कौन थे जो मनुष्य को जन्मना नहीं, कर्मणाश्रेष्ठ या अधम समझते थे–
(अ) ईश्वर चन्द्र विद्यासागर (ब) महात्मा गाँधी
(स) बुद्ध (द) महावीर स्वामी

(x) संन्यास की संस्था को किसके समान बतलाया है है।
(अ) ईश्वर –विरोधिनी संस्था (ब) धर्म –विरोधिनी संस्था
(स) समाज–विरोधिनी संस्था (द) उपर्युक्त सभी

प्र.2 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्न में से सही विकल्प चुनकर लिखिए। 1×5 = 5

निर्भय स्वागत करो मृत्यु का,
मृत्यु एक है विश्राम – स्थल,
जीव जहाँ से फिर चलता है,
धारण कर नव जीवन संबल।
मृत्यु एक सरिता है, जिसमें
श्रम से कातर जीव नहाकर
फिर नूतन धारण करता है।
काया रूपी वस्त्र बहाकर।
सच्चा प्रेम वही है जिसकी –
तृप्ति आत्म – बलि पर हो निर्भर !
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,
करो प्रेम पर प्राण निछावर।

(i) कवि ने किसका स्वागत करने की बात कही है –
(अ) जीवन का (ब) मृत्यु का
(स) खुशियों का (द) सभी का

(ii) मृत्यु का क्या बतलाया गया है
(अ) शाश्वत सत्य (ब) विश्राम – स्थल
(स) अटल (द) उपर्युक्त सभी

(iii) किसमे नहाकर जीव नूतन धारण करता है।
(अ) मृत्यु रुपी सरिता (ब) श्रम की सरिता में
(स) आँसूंओ की सरिता में (द) सभी में

(iv) सच्चा प्रेम किसे कहा है
(अ) जिसकी –तृप्ति आत्म – बलि पर हो निर्भर !
(ब) जिसकी –तृप्ति आत्म – चेतना पर हो निर्भर
(स) जिसकी –तृप्ति आत्म – सम्मान पर हो निर्भर
(द) उपर्युक्त सभी पर निर्भर हो

(v) त्याग के बिना प्रेम कैसा है
(अ) व्यर्थ (ब) अप्रोजनीय
(स) निष्प्राण (द) उपर्युक्त सभी

प्र.3 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए। 1×5 = 5

(i) जब एंकर सूचना के साथ - साथ किसी प्रत्यक्षदर्शी या संबन्धित व्यक्ति का कथन भी दिखलता है, टीवी समाचार का यह रूप कहलाता है -

(अ) ब्रेकिंग न्यूज (ब) फोन दृइन

(स) एंकर विजुअल (द) एंकर बाइट

(ii) जब किसी समाचार का सीधे घटना स्थल से ही प्रसारण किया जाता है, टीवी समाचार का यह रूप कहलाता है।

(अ) ब्रेकिंग न्यूज (ब) फोन–इन

(स) एंकर विजुअल (द) लाइव

(iii) जिस समाचार मे एंकर द्वारा प्रस्तुत सूचनाएँ ,घटना के दृश्य ,बाइट ,ग्राफिक आदि द्वारा सभी सूचनायेँ व्यवस्थित ढंग से दिखाई जाती है टीवी समाचार का यह रूप कहलाता है।

(अ) ब्रेकिंग न्यूज (ब) फोन दृइन

(स) एंकर विजुअल (द) एंकर पैकेज

(iv) भारत की पहली साइट कौनसी है जो इंटरनेट पत्रकारिता कर रही है –

(अ) रीडिफ (ब) फेस बुक

(स) व्हाट्सप (द) इंस्टाग्राम

(v) वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता किसने शुरू की–

(अ) तहलका डाट कॉम (ब) फेस बुक

(स) व्हाट्सप (द) इंस्टाग्राम

प्र.4 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए। 1×5 = 5

जिंदगी में जो कुछ हैं जो भी है
सही स्वीकारा है।
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है।
गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब
यह विचार – वैभव सब
दृढता यह, भीतर की सरिता यह अभिनव
सब मौलिक है, मौलिक है
इसलिए कि पल – पल में
जो कुछ भी जाग्रत है अपलक है
संवेदन तुम्हारा है।

(i) जिन्दगी में जो कुछ हैं जो भी है सहर्ष स्वीकारा है ,क्यों ?

(अ) क्योकि उसकी प्रेयसी ने उसे हर स्थिति में स्वीकारा है

(ब) क्योकि उसके पास दूसरा कोई विकल्प नहीं

(स) क्योकि वह भाग्य से लड़ नहीं सकता

(द) उपर्युक्त सभी

(ii) इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है, वह तुम्हें प्यारा है। उक्त पंक्ति में तुम्हे किसके लिए प्रयुक्त हुआ है –

(अ) प्रेयसी के लिए　　(ब) ईश्वर के लिए

(स) मित्र के लिए　　(द) सभी के लिए

(iii) कवि ने किस को गर्व करने योग्य बतलाया है –

(अ) गरीबी को　　(ब) दृढ़ता को

(स) अनुभव को　　(द) उपर्युक्त सभी को

(iv) इसलिए कि पल – पल में जो कुछ भी जाग्रत है, अपलक है, संवेदन तुम्हारा है। उक्त पंक्ति में तुम्हारा किसके किसके लिए प्रयुक्त हुआ है –

(अ) अपनी प्रिय के लिए　　(ब) पत्नी के लिए

(स) परमात्मा के लिए　　(द) उपर्युक्त में से किसी के लिए नहीं

(v) कवि ने मौलिक किसे कहा है।

(अ) गरीबी को　　(ब) दृढ़ता को

(स) अनुभव को　　(द) उपर्युक्त सभी को

प्र.5 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए।　　1×5 = 5

अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करूण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कही प्रकाश का नाम नही। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्तें मे ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पडतें थें।

सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज कभी–कभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती थी। गाँव की झोपडियों से कराहने और कै करने की आवाज, 'हरे राम ! हे भगवान ! की टेर अवश्य सुनाई पडती थी। बच्चे भी कभी कभी निर्बल कंठो से 'माँ–माँ पुकारकर रो पडतें थे। पर इससे रात्रि की निस्तब्धता में विशेष बाधा नही पडती थी। कुत्तों में परिस्थिति को ताडने की एक विशेष बृद्धि होती हैं। वे दिन – भर राख के घूरों पर गठरी की तरह सिकुडकर मन मानकर पडें रहते थे। संध्या या गंभीर रात्रि को सब मिलकर रोते थें।

(i) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है –

(अ) भक्तिन　　(ब) बाजार दर्शन

(स) काले मेघा पानी दे　　(द) पहलवान की ढोलक

(ii) उक्त गद्यांश के लेखक का नाम क्या है

(अ) महादेवी वर्मा　　(ब) जैनेद्र

(स) धर्मवीर भारती　　(द) फणीश्वर नाथ रेणु

(iii) अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी ,इस कथन से लेखक का क्या आशय है –

(अ) प्रकृति दुखी लोगों के प्रति सहानुभूति प्रकट कर रही थी

(ब) अँधेरी रात में बारिश हो रही थी

(स) अँधेरी रात को सान्तवना देनेवाला कोई नहीं था

(द) उपर्युक्त सभी

(iv) संध्या या गंभीर रात्रि को सब मिलकर रोते थें ,सारे किसके लिए आया है –

(अ) गाँव के सारे कुत्तों के लिए　　(ब) सारे पेचकों के लिए

(स) सारे सियारों के लिए　　(द) सभी के लिए

(v) निम्नलिखित में से सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी

(अ) निस्तब्धता (ब) करुणा

(स) भावुकता (द) क्रंदन

प्र.6 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए। 1×10 = 10

(i) सभी जन इस जो हुआ से मरते है ,यह कथन है –

(अ) किशन दा का (ब) यशोधर बाबू का

(स) भूषण का (द) चन्द्र दत्त तिवारी का

(ii) यशोधर बाबू गमझा पहनकर बैठक मे आए ,यह बात किसे अच्छी नहीं लगी –

(अ) बेटी को (ब) भूषण को

(स) पत्नी को (द) सभी को

(iii) यह ऊनी ड्रेसिंग गाउन है ,यह मै आपके लिए लाया हूँ ,आप जब सवेरे दूध लेने जाते है तो फटा पुलोवर पहन कर चले जाते है ,जो बहुत बुरा लगता है ,यह सुनकर यशोधर बाबू की आँखें ......

(अ) खुशी से भर गई (ब) नम हो गई

(स) शर्म से झुक गई (द) शर्म से लाल हो गई

(iv) लेखक आनंद यादव के पिता के बारे मे खुले सांड की तरह घूमने की बात किसने कही –

(अ) दत्ता राव सरकार ने (ब) लेखक आनंद यादव की ने

(स) स्वयं लेखन ने (द) किसी अन्य ने

(v) लेखक आनंद यादव के पिता ने लेखक के सामने जो शर्त रखी ,उनमे से कौनसी शर्त शामिल नहीं थी –

(अ) सुबह ग्यारह बजे तक खेत पर काम करना (ब) घंटा भर पशु चरना

(स) काम की अधिकता पर छुट्टी लेना (द) खेलने नहीं जाना

(vi) मुअनदो जड़ो की किन चीजों को देखकर लेखक को राजस्थान के कुलधारा गाँव की याद आई –

(अ) घरों को देखकर (ब) गलियों को देखकर

(स) घरों और गलियों को देखकर (द) महाकुंड को देखकर

(vii) मुअनदो जड़ो की खुदाई मे मिली चीजें कहाँ र खी हुई है

(अ) दिल्ली मे (ब) कराची और लाहौर मे

(स) लंदन मे (द) उपर्युक्त तीनों जगह

(viii) यहूदियों को बाहर निकलने के लिए क्या करना पड़ता था –

(अ) लाल सितारा लगाकर निकलना पड़ता था

(ब) पीला सितारा लगाकर निकलना पड़ता था

(स) हरा सितारा लगाकर निकलना पड़ता था

(द) नीला सितारा लगाकर निकलना पड़ता था

(ix) अज्ञातवास के दौरान यहूदियों की मदद करते थे

(अ) फ्री नीदरलैंड वाले (ब) ब्रिटेनवाले

(स) स्थानीय लोग (द) सभी

(x) युद्ध के बाद युद्ध का वर्णन करनेवाली डायरियों व पत्रों का संग्रह किया जाएगा ,यह घोषणा की थी –

(अ) केबिनेट मंत्री वोतके स्टीन ने (ब) चर्चिल ने

(स) हिटलर ने (द) पोल दे क्रुइफ ने

खण्ड 'ब'

प्र.7 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 150 शब्दों के लगभग रचनात्मक लेख लिखिए। **5**

(अ) महंगाई (ब) स्वच्छता अभियान

(स) विद्यार्थी जीवन में योग का महत्व (द) बढ़ते शहर–बढ़ता प्रदूषण

प्र.8 विद्यालय में व्याप्त अवव्स्था के अभाव की ओर ध्यानाकर्षण हेतु स्वयं को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय का छात्र मानते हुए प्रधानाचार्य कोम प्रार्थना पत्र लिखिए। 5

प्र.9 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3+2 = 5

(i) नाटक में संवाद लिखते समय किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए ?

(ii) कहानी में वातावरण का भी विशेष ध्यान रखा जाता है, क्यों? स्पष्ट कीजिए।

प्र.10 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3+2 = 5

(i) समाचार किस प्रकार की शैली में लिखे जाते है?

(ii) आर्थिक पत्रकारिता पर टिप्पणी लिखिए।

प्र.11 निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिये। 3+3 = 6

(i) कैमरे में बंद अपाहिज करूणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है, विचार कीजिए।

(ii) कवि को क्या असहनीय प्रतीत होता है और क्यों ?

(iii) कवि अपने प्रियतम को क्यों भूलना चाहता है ?

प्र.12 निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों मे दीजिये 2+2 = 4

(i) नील जल में हिलती झिलमिलाती देह के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ?

(ii) लक्ष्मण के मूर्च्छिती होने पर राम क्या सोचने लगे ?

(iii) उषा कविता के आधार पर उस जादू को स्पष्ट कीजिए जो सूर्योदय के साथ टूट जाता है।

प्र.13 निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों मे दीजिये 3+3 = 6

(i) लेखक ने किन आधारों पर अर्थ शास्त्र मायावी एंव अनीतिपूर्ण कहा है और क्यों ?

(ii) लुट्टन राज दरबार का पहलवान कैस बन सका ?

(ii) भक्तिन के सुसरालवालों का भक्तिन के प्रति व्यवहार कैसा था?

प्र.14 निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों मे दीजिये 2+2 = 4

(i) इन्दर सेना के सम्बन्ध में लेखक ने क्या बताया है ? इसका दूसरा नाम क्या था ?

(ii) लेखक के मत से 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है ?

(iii) दो कन्या– रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र – महिमा में अंधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। ऐसी घटनाओं से ही अकसर यह धारणा है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है। क्या इससे आप सहमत है ?

MODEL QUESTION PAPER
(Academic Session : 2020 - 2021)

HINDI SOLUTION

खंड 'अ'

उ.1 (i) (स) वैदिक युग

(ii) (स) वैदिक युग को

(iii) (ब) स्वर्ण काल

(iv) (स) वैदिकयुग

(v) (अ) जब बौद्ध युग का आंरभ हुआ

(vi) (स) आधुनिक–आंदोलन

(vii) (अ) बुद्ध ने

(viii) (अ) ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

(ix) (स) बुद्ध

(x) (स) समाज–विरोधिनी संस्था

उ.2 (i) (ब) मृत्यु का

(ii) (ब) विश्राम – स्थल

(iii) (अ) मृत्यु रुपी सरिता

(iv) (अ) जिसकी –तृप्ति आत्म – बलि पर हो निर्भर !

(v) (स) निष्प्राण

उ.3 (i) (द) एंकर बाइट

(ii) (द) लाइव

(iii) (द) एंकर पैकेज

(iv) (अ) रीडिफ

(v) (अ) तहलका डाट कॉम

उ.4 (i) (अ) क्योकि उसकी प्रेयसी ने उसे हर स्थिति में स्वीकारा है

(ii) (अ) प्रेयसी के लिए

(iii) (द) उपर्युक्त सभी को

(iv) (अ) अपनी प्रिय के लिए

(v) (स) अनुभव को

उ.5 (i) (द) पहलवान की ढोलक

(ii) (द) फणीश्वर नाथ रेणु

(iii) (अ) प्रकृति दुखी लोगों के प्रति सहानुभूति प्रकट कर रही थी

(iv) (अ) गाँव के सारे कुत्तों के लिए

(v) (अ) निस्तब्धता

उ.6 (i) (अ) किशन दा का

(ii) (अ) बेटी को
(iii) (ब) नम हो गई
(iv) (अ) दत्ता राव सरकार ने
(v) (द) खेलने नहीं जाना
(vi) (स) घरों और गलियों को देखकर
(vii) (द) उपर्युक्त तीनों जगह
(viii) (ब) पीला सितारा लगाकर निकलना पड़ता था
(ix) (अ) फ्री नीदरलैंड वाले
(x) (अ) केबिनेट मंत्री वोतके स्टीन ने

खण्ड 'ब'

उ.7 (अ) महँगाई

महँगाई, मुद्रास्फीति से भी जोडी जाती है, यह भी माना जाता है कि जब अर्थव्यवस्था सुधरती है तो लोगो की आमदनी बढती है। अब जब आमदनी बढती है तो मुद्रा–स्फीति बढती है। बाजार में माँग बढती है और फिर महँगाई का बढना स्वाभाविक है। इसी से महँगाई को अर्थव्यवस्था की ड्राइविग फोर्स भी माना जाता है, पर जब यह आसमान छूने लगती है तो अर्थव्यवस्था के मार्ग में रोडा भी बन जाती है। अर्थशास्त्र अभी भी यह व्याख्या नही कर सका है कि किस माँग तक कि महँगाई ड्राइविंग फोर्स है और कहाँ पहुचँकर यह रोडा बन जाती है। पर समस्या हैं वर्तमान महँगाई, यह कितनी बढ़ रही है। कहाँ बढ़ रही है। इसके आँकडे जमा करना और उसका सम्बन्ध मूल्य सूचकांक से जोडना सहज सम्भव नही हैं इसी से सरकार कान में तेल डाले बैठी है। क्योकि प्याज की कीमत 40 रूपयें पहुचँ गयी, टमाटर 40 रूपयें पहुचँ गया, दालें 60–70 रूपयें के इर्द–गिर्द घुम रही है। भला यह मुद्रा स्फीति के आँकडे में कैसे समा सकती है। यह तो गरीब से ही पूछना होगा। जो व्यक्ति 3500 रू मासिक कमाता है। और अपने वृद्ध माता–पिता, पत्नी और तीन बच्चों का पेट भरता है। वह तो वही बता सकता है। अगर वह 40 ग्राम दाल बनाता है ओर मात्र दाल रोटी खाता हैं वह भी बिना घी की तो एक किलो आटा सहित उसका खर्चा 40 रूपयें बैठ जाता है। मात्र दाल रोटी की यह महँगाई गरीब का ही नही, मध्यमवर्गीय व्यक्तियों को भी प्रभावित करती है और यहाँ अर्थशास्त्र घुटने टेक देता है। समाजशास्त्र कहता है – गरीबों को भी जीने का अधिकार हैं और उन्हें दो समय की रोटी मिलनी ही चाहिए। अर्थशास्त्र कहता हैं – इसके दो ही उपाय है – सरकार समस्त वितरण को अपनी एजेन्सी के माध्यम से वितरित करायें और सब्सिडी के आधार पर किमतें उस स्तर पर ले आयें, जहाँ गरीब आदमी अपनी क्रय क्षमता के दायरे में रहकर रोटी दाल खा सकें अथवा आयत या उत्पादन बढ़ाकर बाजार में समग्री की उपलब्धता बढ़ा दे, सामान सस्ता हो ही जायेगा। पर यहाँ भी समस्याएँ है – सरकारी वितरण प्रणली और कन्ट्रोल पद्धति हमारे यहाँ कभी भी कारगर नही हो सकी, क्यों ? यह बहस का विषय हैं पर प्रत्यक्ष अनुभव तो ऐसा ही है। उत्पादन कढाना भी हमारे बस की बात नही है। प्रतिवर्ष हजारों एकड कृषियोग्य भूमि सरकारी संरक्षित उद्योग निगलते जा रहे है। सडकें, चाटती जा रही हैं और भूमि बढायी नही जा सकती। साथ ही उत्पादन क्षमता भी चौगुनी नही बढायी जा सकती है और न ही कोई ऐसी तकनीक अभी तक विकसित हो सकी है कि एक साल में ही उत्पादन उतना बढ जायेगा कि माँग–पूर्ति का सन्तुलन स्थापित हो जायेगा। अब रही आयात की समस्या– यह एक बडा मसला है। जिसमें दृढ राजनैतिक इच्छा शक्ति की आवश्यकता है और वह इस धरती पर अभी तक तो पनप नही सकी है। भविष्य में क्या होगा ? यह तो अर्थशास्त्री ही बता सकेगे। पर कुछ होना आवश्यक है और वह भी अति शीध्र अन्यथा यह महँगाई औसत आदमी के लिए प्राणलेवा बन जायेगी।

उ.8 सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,

राज. उच्च. माध्य. विद्यालय,

रामगढ़।

विषय : विद्यालय में व्याप्त .... सम्बधी अव्यवस्था की ओर ध्यानाकर्षण हेतु।

मान्यवर,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि विगत कई माह से विद्यालय में अव्यवस्था की स्थिति बनी हुई है, जिसके कारण छात्रों को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। यथा कक्षा–कक्ष के छात्र संख्या के अनुपात में पर्याप्त फर्नीचर नहीं है और जो है वह भी अधिकांश टूटा हुआ है। प्रयोगशाला कक्ष की स्थिति भी अच्छी नहीं है। प्रयोगशाला कक्ष में न तो पर्याप्त उपकरण है और न प्रयोग में आने वाली सामग्री ही उपलब्ध रहती है। यहाँ तक कि पुस्तकालय भी अव्यवस्था का शिकार बना हुआ है। हमारे विद्यालय के पुस्तकालय में प्रर्याप्त मात्रा में ज्ञानोपयोगी पुस्तकों का संग्रह है, किन्तु पुस्तकालय का अधिकांश समय बन्द रहना, अव्यवस्थित तरीके से पुस्तकों का रख–रखव, पुस्तकालय अध्यक्ष का छात्रों के साथ उपेक्षित व्यवहार जैसे कुछ ऐसे कारक है जिनके कारण छात्र पुस्तकालय सुविधा का यथोचित लाभ नहीं उठा पाते है। खेल सम्बन्धी गतिविधियाँ तो जैसे बन्द प्रायः पड़ी है। विद्यालय में पर्याप्त खेल का मैदान उपलब्ध है। खेल सामग्री क्रय करने हेतु शारीरिक शिक्षक की उदासीनता एवं उत्साह हीनता के कारण खेल कूद सम्बन्धी गति विधियाँ संचालित नहीं हो पा रही है।

अतः आपसे निवेदन है कि इस ओर ध्यान देकर अव्यवस्थित व्यवस्था को दुरस्त कर सुचारू ढंग से क्रियान्वित किये जाने का प्रयास करें ताकि छात्र प्राप्त सुविधाओं से लाभान्वित हो सकें।

दि. 5 सित. 2020 आपका आज्ञाकारी शिष्य,

क ख ग

उ.9 (i)
- नाटक में नाटककार के पास अपनी और से कहने का अवकाश नहीं रहता।
- यह संवादों द्वारा ही वस्तु का उद्घाटन तथा पात्रों के चरित्र का विकास करता है।
- अतः इसके संवाद सरल, सुबोध, स्वभाविक तथा पात्रअनुकूल होने चाहिए।
- गंभीर दार्शनिक विषयों से इसकी अनुभूति में बाधा होती है।
- इसलिए इनका प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(ii) कथ्य, कथानक और पात्रों की सत्यता देशकाल वातावरण में उन्हें और ज्यादा विश्वसनीय बना देती है। कहानी के सभी पात्र योग्य वातावरण में ही सजीव होते है।

उ.10 (i) समाचार पत्रों को पढकर स्पष्ट होता है कि प्रायः सभी समाचार एक विशेश शैली में लिखे जाते है। इन समाचारों में किस भी विचार समस्या या घटना के सबसे महत्वपूर्ण अंश को प्रथम पैराग्राफ में या प्रारंभ में लिखा जाता है। उसके पश्चात विचार, समस्या या घटना से संबंधित कम महत्वपूर्ण सूचना अथवा तथ्य के विषय में लिखा जाता है। यह प्रक्रिया समाचार समाप्त होते तक निरंतर चलती रहती है। लेखन की इस शैली को उल्टा पिरामिड शैली (इवटेंड पिरामिड स्टाइल) कहते है। समाचार लेखन की यह अत्यंत लोकप्रिय तथा उपयोगी शैली है।

(ii) पिछले कुछ सालों से आर्थिक पत्रकारिता का महत्व अधिक हो गया है। इसका मूल कारण है कि देश की राजनीति और अर्थव्यवस्था से अत्यधिक परिवर्तन आया है। आर्थिक उदारीकरण व देश में खुली अर्थव्यवस्था लागू होने के पश्चात अर्थव्यवस्था में अत्यधिक परिवर्तन आया है। अतः एक आर्थिक पत्रकार देश राजनीति में और उसमें हो रहे परिवर्तनों को जानकारी होनी चाहिए। आर्थिक मामलों की पत्रकारिता अन्य पत्रकारिता की अपेक्षा काफी जटिल होती है। इसका कारण यह है कि इसकी शब्दावली के बारे में सामान्य लोगों को पता ही नहीं होता। इस शब्दावली को साधारण लोगों को समझ में आने लायक बनाना आर्थिक मामलों का पत्रकार बडी कुशलता से करता है। इस प्रकार आर्थिक मामलों पर पत्रकारिता करते समय लेखन में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह किस वर्ग के पाठक के लिए लिखा जा रहा है।

उ.11 (i) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कार्यक्रम करूणा दिखाने के लिए बनाया जा रहा है। किन्तु इसमें करूणा का बनावटी मुखौटा है। उद्देश्य अपने चैनल के लिए एक बिकाऊ कार्यक्रम बनाना है। अपाहिज से जो बेहूदे प्रश्न पूछे गए हैं उनमें करूणा नही, क्रूरता है।

इन प्रश्नों में कही भी करूणा का भाव नही है। अपाहिज से कहा जा रहा है कि कोशिश कीजिए। अन्यथा यह अवसर खो देगे। मानो इस अवसर को पाकर उसका अपाहिजपन दूर हो जाएगा। अपने स्वार्थ के लिए किसी अपाहिज का मजाक बनाना क्रूरता ही है।

(ii) कवि को अपने प्रिय का उसे सदा घेरे रहना, उसके जीवन पर प्रकाश फैलाए रखना, उस पर ममता उडेलते रहना और कोमलता का स्पर्श देना असहनीय प्रतीत होता है। क्यों – इससे उसकी अपनी आत्मा कमजोर हो गई है। उसे अपने पर विश्वास नही रहा। उसे अपने भविष्य की आंशकाएँ सताने लगी है कि प्रिय के न रहने पर उसका क्या होगा ?

(iii) कवि विस्मृति के घने अँधेरे में लापता हो जाना चाहता है। वह अपने प्रियतम को भूल जाना चाहता है। क्योकि प्रियतम का निरन्तर मिलने वाला प्रेम उसे सहन नही हो रहा। इस स्नेह पर निर्भर रहकर कवि अपने स्वतन्त्र मौलिक व्यक्तित्व से वंचित हो चुका है। वह अपने बूते पर कुछ भी कर नही पाता है। उसको अपने प्रियतम की प्रेरणा की निरन्तर जरूरत रहती है। उसने माना है – जो कुछ भी जाग्रत है, अपलक है सवेदन तुम्हारा है। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए कवि अपने प्रियतम को भुलाना चाहता है।

उ.12 (i) कवि नील जल के माध्यम से नीले आकाश का चित्रण करना चाहता है। सूरज का नित–नित बढते जाना किसी रूपसी नारी की गोरी देह का खिलते जाना है। इस प्रकार कवि नीले आकाश में विकीर्ण होती सूरज की धवल किरणों के प्रकाश का चित्रण करना चाहता है।

(ii) लक्ष्मण शक्तिबाण लगने से मूर्च्छित हो गए। यह देखकर राम भावुक हो गए तथा सोचने लगे कि पत्नी के बाद अब भाई को खोने जा रहे है। केवल एक स्त्री के कारण मेरा भाई आज मृत्यु की गोद में जा रहा है। यदि स्त्री खो जाए तो कोई बडी हानि नही होगी, परन्तु भाई के खो जाने का कंलक जीवनभर मेरे माथे पर रहेगा। वे सामाजिक अपयश से घबरा रहे थे।

(iii) सूर्योदय से पूर्व उषा का दृश्य अत्यंत आकर्षक होता है। भोर के समय सूर्य के किरणें जादू के समान लगती है। इस समय आकाश का सौन्दर्य क्षण – क्षण में परिवर्तन होता रहता हैं यह उषा का जादू हैं नीले आकाश का शंख सा पवित्र होना, काली सिल पर केसर डालकर धोना, काली स्लेट पर लाल खडिया मल देना, नीले जल में गोरी नायिका का झिलमिलाता प्रतिबिन्ब आदि दृश्य उषा के जादू के समान लगते है। सूर्योदय होने के साथ ही ये दृश्य समाप्त हो जाते है।

उ.13 (i) लेखक के अनुसार – कैपिटलिस्टिक अर्थशास्त्र अर्थात पूँजीवादी अर्थशास्त्र, जो धन को अधिक से अधिक बढाने पर बल देता है। मायावी है, छली है और अनीतिपूर्ण है। उसके कारण निम्नलिखित है –

1 बाजार का मूल दर्शन है – आवश्यकताओं की पूर्ति करना। यदि इस लक्ष्य को छोडकर व्यापारी धन कमाने की होड में लग जाएँ तो बाजार का असली लक्ष्य ही नष्ट हो जाता है। यह बाजार के नाम पर भटकाव है। ग्राहक को आवश्यकता की वस्तु उचित दाम पर देने की बजाय अगर पैसा कमाना लक्ष्य रख लिया जाए तो बाजार का असली लक्ष्य पूरा ही नही हो पाता।

2 पैसा कमाने का लक्ष्य साधने से व्यापार में कपट बढता है। व्यापारी ग्राहक की हानि करके भी अपना लाभ कमाना चाहते है। इससे शोषण की शुरूआत हो जाती है। अतः यह अनीतिपूर्ण है।

3 ऐसे पूँजीवादी बाजार से मानवीय प्रेम, भाईचारा, तथा सौहार्द समाप्त होता है। सभी लोग ग्राहक और विक्रेता बनकर रह जाते है।

4 पूँजीवादी अर्थशास्त्र के कारण ही बाजार में फैंसी चींजो का प्रचलन बढता है। लोग बिना आवश्यकता के ही उसके रूप जाल में फँसने लगते है। इसलिए लेखक ने उसे मायावी कह दिया है।

(ii) राजा साहब की अनुमति मिलते ही बाजे बजने लगे। दर्शकों में उत्तेजना फैल गई और वे कोलाहल करने लगे। मेले के दुकानदार दुकाने बन्द करके कुश्ती देखने आ पहुँचे। ढोल की आवाज सुनाई दी। लुट्टन को चाँद सिंह ने कसकर दबा लिया। दर्शकों ने तालियाँ बजाई – " अरे गया गया। हलुआ हो जाएगा, हलुआ ! हँसी – खेल नही – शेर का बच्चा है .... बच्चू।" लुट्टन की गर्दन पर केहुनी डालकर चाँद उसे चिंत करने की कोशिश में लगा था। बादल सिंह अपने शिष्य का उत्साह बढा रहा था। लुट्टन की आँखे बाहर निकल रही थी। उसकी छाती जा रही थी। सभी चाँद सिंह को शाबाशी दे रहे थे। लुट्टन

के पक्ष में कोई नही था। ढोल की ताल पर वह अपने दाव – पेंचों की परीक्षा ले रहा था। अचानक ढोल की आवाज आई – 'धाक धिना, तिरकट – तिना' अर्थात 'दाँव काटो बाहर हो जा।'' अचानक लुट्टन ने चाँद की पकड से छूटकर उसकी गर्दन पकड ली। उसने चालाकी से दाँव और जोर लगाकर चाँद को जमीन पर दे मारा। तभी ढोल की आवाज 'धिना – धिना' अर्थात 'चित करो' सुनकर उसने अंतिम जोर लगाकर चाँद को चित कर दिया। चाँद सिंह के साथ कुश्ती में लुट्टन का समर्थक कोई नही था। राजा, राजकर्मचारी तथा अधिकांश दर्शक चाँद सिंह के पक्ष में थे। लुट्टन केवल ढोल की आवाज के बल पर अपनी शक्ति, साहस तथा दाँव – पेचों की परीक्षा ले रहा था। वह ढोल की आवाजों को ध्यान से सुनता था। उस कुश्ती में उसे ढोल की आवाजों से प्राप्त संकेतों का ही समर्थन मिल रहा था। ढाल के संकेतों पर चलकर ही वह कुश्ती का विजेता बना था। कुश्ती में 'शेर के बच्चे' की उपाधि प्राप्त पहलवान चाँद सिंह को हराने पर राजा साहब ने प्रसन्न होकर लुट्टन को राज पहलवान बना दिया। वह सदा के लिए दरबार का पहलवान हो गया। राजा साहब उसको लुट्टन सिंह कहकर पुकारने लगे।

उ.14 (i) इन्दर सेना दस – बारह से सोलह–अठारह वर्ष के लडकों का एक दल था। जब वर्षा नही होती थी और लोग गर्मी के कारण त्राहिमाम करने लगते थे तब वे काले मेघा पानी दे कहकर बादलों से वर्षा करने को कहते थे। ये लडके नंगे होकर केवल एक कच्छा या लगोटी पहने, गली–गली में घूमते थे। वे 'बोलों गंगा मैया की जय' का नारा लगाते थे। वे किसी दुमंजिले मकान के नीचे एकत्र होकर पानी माँगते थे। तब स्त्रियाँ और लडकियाँ उनके ऊपर बाल्टी या घडों से पानी डालती थी। वे गली में कीचड में लेट जाते थे ओर उछल – कूद करते हुए अगले घर की ओर चले जाते थे। लोगों का विश्वास था कि इससे प्रसन्न होकर इन्द्र देवता पानी बरसाते है। लोग घृणावश इनकों 'मेढक – मण्डली' कहकर पुकारते थे।

(ii) लेखक के मत से दासता से अभिप्राय केवल अपनी कानूनी पराधीनता नही है। दासता की व्यापक परिभाषा यह है जिसमें किसी को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न देना। इसका सीधा अर्थ उसे दासता में जकडकर रखना होगा। इसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होनो पडता है।